सं जो वि /एफ डी/ 57-84/24659. -- चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैं एलाईड इन्जीनियरिंग प्लाट नं 5 सैक्टर 6 फरीवाबाद, के श्रमिकों तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई भोडोंगिल विवाद है;

मोर पूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निरिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, सन, भीकोगिक विवाद धिवित्यमं, 1947ं की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त श्रिधिनियमं की घारा 7-क के धिधीन गठित, भीबोगिक प्रिकरण, हरियाणा करोदाबाद को नांवे विनिद्धिंग मामलें, जो कि उक्त प्रवस्त में तथा श्रिमिकों के बीच या तो विवादयस्त मामला (मामलें) हैं। हैं, प्रयोग विवाद से संगत या सन्वन्धित मामला (मामलें) हैं। हैं, न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं:—

- 1. क्या श्रमिक 20 प्रतिशत की दर से वर्ष 1981-82 तया 1982-83 के वोनस के हकदार है ? यदि हां तो किस बिदरण में ?
- 2. क्या श्रमिक भौसम के ध्रनुसार दो जोड़े वर्दी लेने के हकदार हैं? यदि हां तो किस विवरण में? मीरा सेठ,

वित्तायुक्त एवं सचिव, हरियाणा सरकार, श्रम तथा रोजगार विभाग।

श्रम विभाग

दिनांक 13 जुलाई, 1984

सं. भी.वि./रोहतक/154-84/24589.—-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राव है कि मै० नैशनत टैक्सटाईल मिल्ज, एम.आई.ई. बहादुरगढ़ (रोहतक) के श्रमिक श्रीमित शान्ति देवो तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामने में कोई भीडोपिक विवाद है;

मोर बुंकि हरियाणा के राज्यकाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, पौद्योगिक विवाद प्रवितियम, 1947 को बारा 10 को उनवारा (1) के वाड (ग) द्वारा पदान को गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं. 9641-1-अम-70/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ पठित सरकारी प्रधिसूचना सं. 3864-ए.एस.ओ. (ई) अम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित अम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के शीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्रीमित शान्ति देवी की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रो.वि./रोहतक/152-84/24603.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० न्यू हरियाणा फाऊंडरी एण्ड जनरम इण्डस्ट्रीज, एम.ग्राई.ई., बहादुरगढ़, के श्रामिक श्रो विश्वाम तथा उसके प्रबन्धकों के बोच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीकोणिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्याय निर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, श्रब, श्रीद्यीगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी श्रीधसूचना सं 9641-1-9 म/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी श्रीधसूचना सं 3864-ए.एस श्रो (ई) श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त

प्रधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय निर्णय हेतू निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :—

न्या श्री विश्राम की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रो. वि./सोनीपत/189-84/24617.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. एग्रो पोली नरज इण्डस्ट्रीज, जी.टी. रोड, कुण्डली, (सोनीपत) के श्रीमक श्री उमा शंकर तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इस में इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधित्यम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं. 9641—1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ पठित सरकारी श्रिधसूचना सं. 3864—ए.एस.झो. (ई) श्रम—70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उवत श्रिधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादशस्त था उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनणय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबंधकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादशस्त मानला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री उमा शंकर की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. भी.नि./रोहतक/158-84/24624.—पूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. लूथरा इन्जीनिरिंग वर्कस देहली रोड़ (सोनीपत), के श्रमिक श्री विनोद सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई बीचोगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब. ग्रौद्योगिक विवाद ग्रविनियम. 1947, की धारा 10 की उपवारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गर्छ शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिविसूचना सं० 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी ग्रविसूचना सं० 3864-ए. एस. ग्रो. (ई) श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उकत प्रविनियाम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत ग्रयचा संबंधित मामला है :---

क्या भी विनोद सिंह की सेवाझों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. ग्रो. वि./ग्राई.डी./सोनीपत/165-84/24631.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. सूरज स्टील इण्डस्ट्रीज. लि॰ इण्डस्ट्रीयल ऐरिया सोनीपत, के श्रीमक श्री द्वाय सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके वाद लिखित मामले में कोई ग्रोहोगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय स्मझते हैं ;

इस लिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम 1947 की धारा 10की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान को गई शिवतयों का प्रयोग करते हुए हिरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं० 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी श्रिधसूचना सं. 3864-ए.एस.श्रो.(ई)श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7 हे अक्षीन गठित श्रम न्यायालय रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामल न्यायिनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त श्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री जय सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? तो वह किस राहर का हक दार है ?